अध्याय – पचंम
शोध सारांश एवं निष्कर्ष

अध्याय – पंचम
शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना :–

अनुसंधान का अर्थ किसी नौवीन तथ्यों की खोज करना है। वास्तव में अनुसंधान एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर किसी समस्या का विश्वसनीय समाधान ज्ञात किया जाता हैं। अनुसंधान प्रश्न करना, जाँच करना, निरीक्षण करना, योजनाबद्ध अध्ययन, व्यापक परीक्षण और तत्परतायुक्त उद्देश्य, सामान्यीकरण की प्रक्रिया है।

पी.वी. यंग के शब्दों में :– ''अनुसंधान एक ऐसी व्यवस्थित विधि है, जिनके द्वारा नौवीन तथ्यों की खोज करना तथा प्राचीन तथ्यों की पुष्टि की जाती है। तथा उनके उन अनुक्रमों, पारस्परिक संबंधों, कारणात्मक व्याख्याओं तथा प्राकृतिक नियमों का अध्ययन करती है, जो कि प्राप्त तथ्यों को निर्धारित करते हैं।''

किसी भी शोध कार्य का प्रमुख अंग उसका सारांश होता है। अतः यह अध्याय शोध से संबंधित उद्देश्यों, परिकल्पनाओं, शोध प्रविधी, तथा प्रयुक्त सांख्यिकीय को सार प्रदान करना है तथा प्रमुख रूप से शोध के निष्कर्षों तथा सुझावों पर मुख्यतः प्रकाश डालता है।

5.2 समस्या का कथन

ग्रामीण क्षेत्र में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को भूगोल अधिगम में आनेवाली कठिनाईयों का अध्ययन

5.3 अध्ययन के उद्देश्य :–

1. कक्षा नवीं के विद्यार्थियों को राजनीतिक मानचित्र पठन में आने वाली कठिनाईयों का अध्ययन करना।
2. कक्षा नवीं के विद्यार्थियों को भौगोलिक विस्तार मानचित्र में आने वाली कठिनाईयों का अध्ययन करना।
3. कक्षा नवीं के विद्यार्थियों को रूढ़ चिन्हों को पढ़ने व लिखने संबंधी आने वाली कठिनाईयों का अध्ययन करना।
4. कक्षा नवीं के विद्यार्थियों को मानचित्र भरणे में आने वाली कठिनाईयों का अध्ययन करना।
5. अनुदानित और बिना अनुदानित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को मानचित्र में आने वाली कठिनाईयों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5.4 परिकल्पना

अनुदानित और बिना अनुदानित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को मानचित्र में आने वाली कठिनाईयों में सार्थक अंतर नहीं है।

5.5 प्रतिदर्श चयन :–

सोलापूर जिला अधिकारी कार्यालय से प्राप्त शालाओं की सुचीनूसार 250 शालाओं में से यादृच्छिक विधि द्वारा 4 शालाओं का चयन किया गया। जिसमें से अनुदानित दो व विना अनुदानित दो विद्यालयों का चयन किया गया।

5.6 शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

इस शोध कार्य में स्वनिर्मित प्रश्नपत्र इस उपकरण का प्रयोग किया गया है।

5.7 शोध निष्कर्ष :–

शोध प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण कर प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित है :–

उद्देश्य क्रमांक 1.

कक्षा नवीं के विद्यार्थियों को राजनीतिक मानचित्र पठन में आने वाली कठिनाईयों का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :– राजनीतिक मानचित्र के अंतर्गत पूछे गये प्रश्नों में 54 विद्यार्थियों को समस्या हुई।

प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार है :–

1) 53.70 प्रतिशत विद्यार्थियों को भारत की सागर सीमा को मानचित्र में देखकर बताने में कठिनाई हुई।
2) 31.48 प्रतिशत विद्यार्थियों को क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे छोटा राज्य और सबसे बड़ा राज्य कौन सा है इसे मानचित्र में देखकर बताने में कठिनाई हुई।
3) 27.7 प्रतिशत विद्यार्थियों को मानचित्र का शीर्षक और उपशीर्षक क्या है इसे मानचित्र में देखकर बताने में कठिनाई हुई।

उद्देश्य क्रमांक 2.

कक्षा नवीं के विद्यार्थियों को भौगोलिक विस्तार पठन में आने वाली कठिनाईयों का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :– भौगोलिक विस्तार मानचित्र के अंतर्गत पूछे गये प्रश्नों में 105 विद्यार्थियों को समस्या हुई।

प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार है :–

1) 93.33 प्रतिशत विद्यार्थियों को मिटटी के प्रकार को मानचित्र में देखकर बताने में कठिनाई हुई।
2) 60 प्रतिशत विद्यार्थियों को गंगा की उपनदीयाँ कौन–सी है इसे मानचित्र में देखकर बताने में कठिनाई हुई।

3) 57.14 प्रतिशत विद्यार्थियों को मध्यप्रदेश राज्य की राजधानी को मानचित्र में दर्शाने में कठिनाई हुई।

उद्देश्य क्रमांक 3.

कक्षा नवीं के विद्यार्थियों को रूढ़ चिन्हों को पढ़ने व लिखन में आने वाली कठिनाईयों का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :– रूढ़ चिन्ह के अंतर्गत पूछे गये प्रश्नों में 81 विद्यार्थियों को समस्या हुई।

प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार है :–

1) 80.24 प्रतिशत विद्यार्थियों को झील का रूढ चिन्ह बताने में कठिनाई हुई।

2) 59.25 प्रतिशत विद्यार्थियों को कोहरा का रूढ चिन्ह बताने में कठिनाई हुई।

3) 44.44 प्रतिशत विद्यार्थियों को लघु ओला, आँधी–बूगला का रूढ चिन्ह बताने में कठिनाई हुई।

उद्देश्य क्रमांक 4.

कक्षा नवीं के विद्यार्थियों को मानचित्र चिन्हित में आने वाली कठिनाईयों का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :– मानचित्र चिन्हित करने के अंतर्गत पूछे गये प्रश्नों में 104 विद्यार्थियों को समस्या हुई।

प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार है :–

1) 93.26 प्रतिशत विद्यार्थियों को गोवा राज्य को मानचित्र में चिन्हित करने में कठिनाई हुई।

2) 89.77 प्रतिशत विद्यार्थियों को भारत देश की राजधानी को मानचित्र में चिन्हित करने में कठिनाई हुई।

3) 64.42 प्रतिशत विद्यार्थियों को मध्यप्रदेश राज्य को मानचित्र में भरणें में कठिनाई हुई।

4) 58.62 प्रतिशत विद्यार्थियों को श्रीलंका देश को मानचित्र में भरणे में उन्हें कठिनाई हुई।

5) 56.73 प्रतिशत विद्यार्थियों को केरल राज्य को मानचित्र में भरणे में उन्हें कठिनाई हुई।

परिकल्पना :–

अनुदानित और बिना अनुदानित विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को मानचित्र में आने वाली कठिनाईयों में सार्थ अंतर नहीं है।

निष्कर्ष :–

अनुदानित और बिना अनुदानित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को मानचित्र में आने वाली कठिनाईयों में सार्थक अंतर नहीं है। मध्यमान से यह कहा जा सकता है कि अनुदानित विद्यालयों में विद्यार्थियों की मानचित्र उपलब्धि ज्यादा है। अर्थात उन्हें थोडी कम कठिनाई हुई।

कक्षा नवीं के विद्यार्थियों में विद्यालय के प्रकार के आधार पर भूगोल संबंधित अधिगम कठिनाईयों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

5.8 सुझाव

5.8.1 अध्यापक हेतु सुझावः–

1. भूगोल विषय के शिक्षकों को पाठ्यांश के अनुरूप मानचित्र का सही इस्तेमाल करना चाहिए। इसमें छात्रों की मूलभूत अवधारणा तथा संकल्पनाएँ स्पष्ट हो सकती हैं।
2. पढ़ाते समय छात्रों को क्रिया के द्वारा शिक्षण देना चाहिए।
3. मानचित्र संबंधी रूचि निर्माण के लिये कुछ कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए। उदाहरणः– मानचित्र चिन्हित स्पर्धा।

4. पाठ्यपुस्तक के अलावा कुछ संदर्भों का इस्तेमाल करना चाहिए।

   उदाहरण :– एटलस।

5. शिक्षकों को पाठ्यपुस्तकों के विषय वस्तु से नहीं बल्कि भूगोल के दैनिक जीवन से जोड़कर पढ़ाना चाहिए।
6. मानचित्र को गतिविधि के आधार पढ़ाना होगा।
7. दक्षता आधारित शिक्षण पर बल दिया जाना चाहिए।
8. खेल द्वारा भूगोल शिक्षा देकर बच्चों को प्रोत्साहित किया जाये।

5.8.2 प्रशासकीय सुझाव :–

1. सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों को समय–समय पर मार्गदर्शन तथा प्रशिक्षण देते रहना चाहिए।
2. सरकारी विद्यालयों में शैक्षिक साहित्य सामग्री सुविधाओं की कर्मी है। इसलिये वहाँ सुविधाएँ बढ़ाई जाए।
3. कमजोर विद्यार्थियों के लिये अतिरिक्त शिक्षण समय रखा जाये।

5.8.3 अभिभावक हेतु सुझाव :–

1. माता–पिता को विद्यार्थियों की पढ़ाई के प्रति सजग रहना चाहिए।
2. बच्चों को घर पर स्वतंत्र रूप से कार्य करके सिखने के अवसर दिये जायें।
3. बच्चों को घर पर अधिक से अधिक प्रश्नों को हल कराने हेतु मानचित्र अधारित कार्यपुस्तिका उपलब्ध करानी होगा।

5.8.4 भावी शोध हेतु सुझाव :–

1. मीडिया/कम्प्यूटर/टी.वी चैनल के साथ भूगोल विषय का संबंध व अध्यापन का अध्ययन किया जा सकता है।

2. माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की मानचित्र विषय में होने वाली अधिगम कठिनाईयों का निदानात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है।
3. इस अध्ययन में मानचित्र की जो संकल्पना ली गई है उसके अलावा संकल्पना को लेकर उनका निदानात्मक परीक्षण तैयार करके अध्ययन किया जा सकता है।
4. बड़ा न्यादर्श को लेकर इसी कार्य को उच्च स्तर पर भी कार्य किया जा सकता है।

D - 356